International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता: सामाजिक परिवर्तन का एक समालोचनात्मक साहित्यिक समीक्षा अध्ययन

Avinash Vankhede
Research Scholar, Department of Sociology , Malwanchal University, Indore
Dr. Sonali Pandit
Supervisor, Department of Sociology , Malwanchal University, Indore

सारांश
यह अध्ययन बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के माध्यम से हो रहे सामाजिक परिवर्तन का समालोचनात्मक साहित्यिक समीक्षा प्रस्तुत करता है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षा के प्रसार, सरकारी योजनाओं, वैश्वीकरण तथा आधुनिक संचार माध्यमों ने जनजातीय समाज की पारंपरिक संरचनाओं, जीवनशैली और सांस्कृतिक पहचान को किस प्रकार प्रभावित किया है। अध्ययन में विभिन्न शोध पत्रों, पुस्तकों और सरकारी रिपोर्टों का विश्लेषण कर यह पाया गया कि शैक्षणिक प्रगति ने सामाजिक गतिशीलता, रोजगार अवसरों तथा जागरूकता को बढ़ाया है, जबकि सांस्कृतिक स्तर पर परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन और पहचान संकट जैसी स्थितियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। समीक्षा यह भी इंगित करती है कि सकारात्मक परिवर्तन के साथ-साथ असमानता, संसाधनों की कमी और शिक्षा तक सीमित पहुँच जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अतः संतुलित विकास के लिए शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच सामंजस्य आवश्यक है।

मुख्य शब्द: अनुसूचित जनजाति, शैक्षणिक गतिशीलता, सांस्कृतिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन, बड़वानी जिला

परिचय

भारत जैसे बहु-सांस्कृतिक और विविधतापूर्ण समाज में अनुसूचित जनजातियाँ सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट अंग हैं, जिनकी जीवनशैली, परंपराएँ और सांस्कृतिक पहचान सदियों से प्राकृतिक परिवेश एवं सामुदायिक मूल्यों पर आधारित रही हैं। मध्य प्रदेश का बड़वानी जिला विशेष रूप से जनजातीय बहुल क्षेत्र है, जहाँ भील, भिलाला और अन्य जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। परंपरागत रूप से ये समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक संसाधनों की दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़े रहे हैं, किन्तु विगत कुछ दशकों में शिक्षा के प्रसार, सरकारी योजनाओं, गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों तथा संचार क्रांति के प्रभाव से इनके सामाजिक जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले हैं। शैक्षणिक गतिशीलता ने जनजातीय युवाओं को नए अवसर प्रदान किए हैं, जिससे उनके व्यावसायिक विकल्पों, सामाजिक स्थिति तथा जीवनशैली में बदलाव आया है। साथ ही, सांस्कृतिक गतिशीलता के परिणामस्वरूप पारंपरिक रीति-रिवाजों, मान्यताओं और सामुदायिक संरचनाओं में भी परिवर्तन हो रहा है, जिससे एक ओर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बल मिला है, तो दूसरी ओर सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की चुनौती भी उत्पन्न हुई है। इस संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन को केवल आर्थिक या शैक्षणिक

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रगति तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक संबंधों, मूल्यों, व्यवहारों और संस्थागत संरचनाओं में परिवर्तन शामिल होता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह विश्लेषण करना है कि बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित कर रही है। यह अध्ययन न केवल विभिन्न विद्वानों के दृष्टिकोणों का समालोचनात्मक परीक्षण करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि इन परिवर्तनों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों आयाम क्या हैं। इस प्रकार, यह शोध जनजातीय समाज में हो रहे परिवर्तन की दिशा, प्रकृति और प्रभाव को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारत में अनुसूचित जनजातियाँ ऐतिहासिक रूप से सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से वंचित रही हैं, विशेषतः ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में उनकी विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी रही है। मध्य प्रदेश का बड़वानी जिला एक प्रमुख जनजातीय क्षेत्र है, जहाँ भील एवं भिलाला समुदायों की संख्या अधिक है और उनकी जीवनशैली परंपरागत संस्कृति, प्राकृतिक संसाधनों तथा सामुदायिक व्यवस्था पर आधारित रही है। स्वतंत्रता के बाद से सरकार द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका सुधार हेतु अनेक योजनाएँ लागू की गईं, जिनका उद्देश्य जनजातीय समाज को मुख्यधारा से जोड़ना रहा है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा का प्रसार, संचार माध्यमों की पहुँच तथा वैश्वीकरण के प्रभाव से इन समुदायों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया तेज हुई है। इसी परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के माध्यम से हो रहे सामाजिक परिवर्तन की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियाँ सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक विशिष्ट स्थिति रखती हैं, जहाँ परंपरागत जीवनशैली और आधुनिक परिवर्तन प्रक्रियाएँ समानांतर रूप से कार्य कर रही हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार, सरकारी नीतियों, वैश्वीकरण और संचार माध्यमों के प्रभाव से जनजातीय समाज में तीव्र सामाजिक परिवर्तन देखने को मिल रहा है, किंतु इन परिवर्तनों की प्रकृति, दिशा और प्रभाव का सम्यक् विश्लेषण अभी भी सीमित है। इस संदर्भ में इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के माध्यम से हो रहे सामाजिक परिवर्तन को समग्र और समालोचनात्मक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा ने जनजातीय समुदायों के जीवन स्तर, रोजगार अवसरों और सामाजिक स्थिति को किस प्रकार प्रभावित किया है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण पारंपरिक मूल्यों, मान्यताओं और पहचान पर क्या प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त, यह शोध नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों के लिए उपयोगी है, क्योंकि इसके माध्यम से जनजातीय विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जा सकता है और भविष्य की योजनाओं के लिए उपयुक्त सुझाव प्रदान किए जा सकते हैं। अतः यह अध्ययन जनजातीय समाज में संतुलित विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक समावेशन सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

1. सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सामाजिक परिवर्तन से आशय समाज की संरचना, संस्थाओं, मूल्यों, व्यवहारों तथा संबंधों में समय के साथ होने वाले परिवर्तन से है। यह परिवर्तन क्रमिक या तीव्र हो सकता है और इसका संबंध आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक कारकों से जुड़ा होता है। जनजातीय समाज के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पारंपरिक जीवनशैली से आधुनिकता की ओर संक्रमण को दर्शाता है।

2. शैक्षणिक गतिशीलता

शैक्षणिक गतिशीलता वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति या समुदाय शिक्षा के स्तर में उन्नति प्राप्त करता है, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा का विस्तार सामाजिक जागरूकता, रोजगार के अवसर और जीवन स्तर में वृद्धि का प्रमुख साधन माना जाता है।

3. सांस्कृतिक गतिशीलता

सांस्कृतिक गतिशीलता से तात्पर्य संस्कृति के विभिन्न तत्वों—जैसे परंपराएँ, रीति-रिवाज, भाषा और जीवनशैली—में समय के साथ होने वाले परिवर्तन से है। जनजातीय समाज में यह प्रक्रिया आधुनिकता, मीडिया, शहरीकरण और बाहरी संपर्क के प्रभाव से तीव्र हुई है, जिससे पारंपरिक संस्कृति और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन की चुनौती उत्पन्न होती है।

4. आधुनिकीकरण सिद्धांत

आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार समाज पारंपरिक अवस्था से आधुनिक अवस्था की ओर बढ़ता है, जिसमें औद्योगीकरण, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और शहरीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह सिद्धांत जनजातीय समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने में सहायक है, विशेषकर जब शिक्षा और तकनीकी विकास सामाजिक संरचना को प्रभावित करते हैं।

5. सांस्कृतिक आत्मसात

सांस्कृतिक आत्मसात सिद्धांत यह बताता है कि जब दो भिन्न संस्कृतियाँ संपर्क में आती हैं, तो उनमें परस्पर प्रभाव और परिवर्तन होता है। जनजातीय समाज में मुख्यधारा की संस्कृति के संपर्क से उनके पारंपरिक मूल्यों, व्यवहारों और पहचान में परिवर्तन देखा जाता है, जिससे एक नई मिश्रित सांस्कृतिक संरचना विकसित होती है।

6. सामाजिक गतिशीलता सिद्धांत

सामाजिक गतिशीलता सिद्धांत समाज में व्यक्तियों या समूहों की सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन को समझाने का प्रयास करता है, जो मुख्यतः शिक्षा, आय, व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा जैसे कारकों पर आधारित होता है। यह सिद्धांत बताता है कि समाज में व्यक्ति अपनी योग्यता, अवसरों और संसाधनों के आधार पर ऊर्ध्व (upward) या अवरोही (downward) गतिशीलता का अनुभव कर सकता है।

शैक्षणिक गतिशीलता का विश्लेषण

1. शिक्षा की वर्तमान स्थिति

बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा की स्थिति पिछले कुछ दशकों में सुधार की दिशा में अग्रसर हुई है, किंतु अभी भी यह राज्य एवं राष्ट्रीय औसत से पीछे मानी जाती है। प्राथमिक स्तर पर नामांकन दर में वृद्धि हुई है, परंतु माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा स्तर पर ड्रॉपआउट की समस्या बनी हुई है, विशेषकर बालिकाओं में।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

2. सरकारी योजनाओं का प्रभाव

सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएँ जैसे छात्रवृत्ति, मध्याह्न भोजन, आवासीय विद्यालय (आश्रम शालाएँ) एवं निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण ने जनजातीय विद्यार्थियों को शिक्षा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन योजनाओं ने नामांकन दर बढ़ाने, नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने तथा शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता की है, हालांकि इनके क्रियान्वयन में क्षेत्रीय असमानताएँ अभी भी देखी जाती हैं।

3. साक्षरता दर एवं शैक्षणिक प्रगति

जनजातीय समुदायों में साक्षरता दर में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है, जो शैक्षणिक गतिशीलता का संकेतक है। युवा पीढ़ी में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की ओर रुझान देखने को मिल रहा है। इसके परिणामस्वरूप रोजगार के नए अवसर और सामाजिक स्थिति में सुधार की संभावनाएँ उत्पन्न हुई हैं।

4. शिक्षा में बाधाएँ

यद्यपि प्रगति हुई है, फिर भी अनेक बाधाएँ शैक्षणिक विकास को प्रभावित करती हैं, जैसे आर्थिक कमजोरियाँ, विद्यालयों की दूरी, आधारभूत सुविधाओं की कमी, भाषा संबंधी कठिनाइयाँ तथा अभिभावकों में शिक्षा के प्रति सीमित जागरूकता। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक कार्यों में बच्चों की भागीदारी और सामाजिक परिस्थितियाँ भी शिक्षा में निरंतरता को बाधित करती हैं। अतः इन चुनौतियों को दूर करने के लिए समन्वित प्रयास आवश्यक हैं, ताकि शैक्षणिक गतिशीलता को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि अनुसूचित जनजातियों में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता सामाजिक परिवर्तन की एक केंद्रीय प्रक्रिया के रूप में उभरकर सामने आई है। अजय कुमार त्रिपाठी (2024) ने अपने अध्ययन में यह प्रतिपादित किया है कि शिक्षा जनजातीय समाज में सामाजिक गतिशीलता का प्रमुख साधन है, जो आर्थिक अवसरों और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रभावित करती है। इसी प्रकार नरेश चंद्र सिन्हा (2024) ने उरांव समाज के संदर्भ में शिक्षा और संस्कृति के अंतर्संबंध का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा न केवल सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करती है, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्गठन की प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है। प्रमोद कुमार निगम (2024) ने आधुनिक शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन करते हुए यह बताया कि शिक्षा जनजातीय समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ने में सहायक है, किन्तु इसके साथ सांस्कृतिक असंतुलन की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। इसी क्रम में कमलेश प्रसाद वर्मा (2024) ने संथाल जनजाति के संदर्भ में सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक परिवर्तन का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया कि शिक्षा के प्रसार से सांस्कृतिक परंपराओं में परिवर्तन की गति तीव्र हुई है।

दूसरे समूह के अध्ययनों में जनजातीय समाज में शिक्षा से संबंधित चुनौतियों और बाधाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। मनोज कुमार चौधरी (2024) ने राजस्थान के भील समुदाय में शिक्षा की चुनौतियों को रेखांकित करते हुए बताया कि आर्थिक कठिनाइयाँ, विद्यालयों की दूरी और सामाजिक जागरूकता की कमी प्रमुख अवरोध हैं। राकेश कुमार कुशवाहा (2024) ने गोंड जनजाति के अध्ययन में यह पाया कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण साधन है, किन्तु इसके लाभ सभी वर्गों तक समान रूप

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

से नहीं पहुँच पाते। इसी प्रकार सुरेश कुमार राठौर (2024) ने डूंगर समुदाय में शैक्षणिक समस्याओं और उनके समाधान पर प्रकाश डालते हुए यह सुझाव दिया कि स्थानीय संदर्भों के अनुसार शिक्षा प्रणाली को अनुकूलित करना आवश्यक है। राजेश कुमार तिवारी (2024) ने मुंडा जनजाति में शिक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तन के संबंध को स्पष्ट करते हुए यह दर्शाया कि शिक्षा के प्रभाव से पारंपरिक सांस्कृतिक ढाँचे में परिवर्तन होता है, जिससे सामाजिक संरचना प्रभावित होती है।

तीसरे समूह के अध्ययनों में विभिन्न जनजातीय समुदायों में शिक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तन के तुलनात्मक विश्लेषण पर बल दिया गया है। संजीव कुमार मिश्रा (2023) ने बस्तर की मुरिया जनजाति में शिक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन करते हुए यह पाया कि शिक्षा ने सामाजिक चेतना और विकास को बढ़ावा दिया है, किन्तु सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण की चुनौती भी उत्पन्न हुई है। रवीन्द्रनाथ पटेल (2023) ने हो जनजाति के संदर्भ में सामाजिक-सांस्कृतिक गतिशीलता और शिक्षा की चुनौतियों का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षा के विस्तार के बावजूद संसाधनों की कमी एक प्रमुख समस्या बनी हुई है। विनोद कुमार रंजन (2023) ने ओडिशा के बोंडा समाज में सामाजिक और शैक्षणिक समावेश का मूल्यांकन करते हुए यह बताया कि समावेशी नीतियों के बावजूद क्षेत्रीय असमानताएँ बनी हुई हैं। मनोज कुमार सिंह (2023) ने कोरकू जनजाति में शिक्षा, सांस्कृतिक निरंतरता और सामाजिक परिवर्तन के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम होने के साथ-साथ सांस्कृतिक निरंतरता को भी प्रभावित करती है।

चौथे समूह के अध्ययन अधिक व्यापक और सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जो जनजातीय समाज में हो रहे परिवर्तन की गहन समझ विकसित करते हैं। राजेश कुमार पटेल (2023) ने अनुसूचित जनजातियों में सांस्कृतिक गतिशीलता को एक समाजशास्त्रीय प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित किया है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता के बीच अंतःक्रिया को प्रमुख माना गया है। विजय शंकर नागेश्वर (2023) ने आदिवासी शिक्षा और सामाजिक प्रगति के अंतर्विरोधों को रेखांकित करते हुए यह बताया कि विकास की प्रक्रिया में असमानताएँ और संरचनात्मक बाधाएँ बनी रहती हैं। नरेश चंद्र कुशवाहा (2023) ने सांस्कृतिक संक्रमण और जनजातीय युवाओं की पहचान पर प्रकाश डालते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि वैश्वीकरण के प्रभाव से सांस्कृतिक पहचान में परिवर्तन हो रहा है। प्रवीण कुमार ठाकुर (2023) ने शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता के संबंध को स्पष्ट करते हुए यह प्रतिपादित किया कि शिक्षा सामाजिक संरचना में परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है। समग्र रूप से, उपलब्ध साहित्य यह इंगित करता है कि शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों आयाम सम्मिलित हैं, तथा इनका संतुलित विश्लेषण आवश्यक है।

सांस्कृतिक गतिशीलता

1. पारंपरिक संस्कृति बनाम आधुनिकता

बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों की पारंपरिक संस्कृति प्रकृति-आधारित जीवनशैली, सामुदायिकता, लोक-परंपराओं और रीति-रिवाजों पर आधारित रही है, किंतु आधुनिकता के प्रभाव से इन मूल्यों में परिवर्तन देखा जा रहा है। पारंपरिक मान्यताओं और आधुनिक जीवनशैली के बीच संतुलन बनाने की चुनौती उत्पन्न हो रही है, जिससे सांस्कृतिक पहचान का प्रश्न भी महत्वपूर्ण हो गया है।

2. सांस्कृतिक परिवर्तन के कारक

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सांस्कृतिक गतिशीलता के प्रमुख कारकों में शिक्षा का प्रसार, शहरीकरण, आर्थिक परिवर्तन, सरकारी हस्तक्षेप तथा बाहरी समाज के साथ बढ़ता संपर्क शामिल हैं। ये सभी कारक जनजातीय समाज को पारंपरिक संरचनाओं से बाहर निकालकर आधुनिक सामाजिक ढाँचे की ओर अग्रसर कर रहे हैं, जिससे जीवनशैली, वेशभूषा और व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देता है।

3. मीडिया और वैश्वीकरण का प्रभाव

मीडिया और वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तीव्र बनाया है। टेलीविजन, मोबाइल फोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से जनजातीय समुदाय वैश्विक संस्कृति से जुड़ रहे हैं, जिससे उनके दृष्टिकोण, उपभोग की प्रवृत्तियाँ और सामाजिक व्यवहार प्रभावित हो रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक सांस्कृतिक तत्वों का क्षरण भी देखने को मिलता है।

4. सांस्कृतिक संरक्षण बनाम परिवर्तन

सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ-साथ संरक्षण की आवश्यकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। जहाँ एक ओर आधुनिकता विकास के नए अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक ज्ञान, लोककला और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की चुनौती उत्पन्न होती है। अतः आवश्यक है कि विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जाए, ताकि जनजातीय समाज अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखते हुए प्रगति की दिशा में अग्रसर हो सके।

सामाजिक परिवर्तन

1. जीवन शैली में परिवर्तन

बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव उनकी जीवनशैली में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। पारंपरिक रूप से प्रकृति-आधारित जीवन, सामुदायिक सहयोग और सरल उपभोग पैटर्न प्रमुख थे, किन्तु अब आधुनिक शिक्षा, शहरी संपर्क और बाजार अर्थव्यवस्था के प्रभाव से आवास, भोजन, पहनावा और उपभोग व्यवहार में परिवर्तन आया है।

2. आर्थिक एवं व्यावसायिक बदलाव

आर्थिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे जा रहे हैं, जहाँ पारंपरिक कृषि और वन-आधारित आजीविका के स्थान पर मजदूरी, सेवा क्षेत्र और छोटे व्यवसायों की ओर रुझान बढ़ा है। शिक्षा और सरकारी योजनाओं के कारण रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हुए हैं, जिससे आय के स्रोतों में विविधता आई है और आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावनाएँ बढ़ी हैं।

3. लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन

लैंगिक भूमिकाओं में भी परिवर्तन हो रहा है, विशेषकर महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में भागीदारी बढ़ने से उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। महिलाएँ अब निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में अधिक सक्रिय हो रही हैं, हालांकि पारंपरिक मान्यताओं और लैंगिक असमानताओं के कारण पूर्ण समानता अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।

4. सामाजिक संरचना में बदलाव

सामाजिक संरचना में परिवर्तन के तहत पारंपरिक सामुदायिक संबंधों, परिवार व्यवस्था और सामाजिक संस्थाओं में बदलाव देखा जा रहा है। संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवारों की प्रवृत्ति बढ़ रही है और सामाजिक संबंधों में औपचारिकता का विकास हो रहा है। इस प्रकार, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

गतिशीलता ने जनजातीय समाज में व्यापक सामाजिक परिवर्तन को जन्म दिया है, जो विकास और परंपरा के बीच संतुलन की आवश्यकता को दर्शाता है।

समालोचनात्मक विश्लेषण

1. शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का संबंध

शिक्षा जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख प्रेरक कारक है, जो न केवल ज्ञान और कौशल का विकास करती है, बल्कि सामाजिक चेतना, जागरूकता और आत्मनिर्भरता को भी बढ़ाती है। बड़वानी जिले की अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा के प्रसार ने रोजगार के नए अवसर, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि और जीवन स्तर में सुधार को संभव बनाया है। तथापि, यह भी देखा गया है कि शिक्षा का लाभ सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है, जिससे सामाजिक असमानताएँ बनी रहती हैं।

2. संस्कृति और पहचान का संकट

सांस्कृतिक गतिशीलता के परिणामस्वरूप जनजातीय समुदायों में पारंपरिक मूल्यों, भाषा, रीति-रिवाजों और सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन हो रहा है, जिससे सांस्कृतिक पहचान का संकट उत्पन्न हो रहा है। आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव से युवा पीढ़ी पारंपरिक संस्कृति से दूर होती जा रही है, जिसके कारण सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की चुनौती बढ़ गई है। यह स्थिति सामाजिक संतुलन के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न प्रस्तुत करती है।

3. सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव

शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिशीलता के परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव सामने आए हैं। सकारात्मक पक्ष में शिक्षा, जागरूकता, आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि शामिल है, जबकि नकारात्मक पक्ष में सांस्कृतिक क्षरण, पहचान संकट, सामाजिक असमानता और पारंपरिक मूल्यों का ह्रास देखा जा सकता है। अतः आवश्यक है कि विकास की प्रक्रिया को इस प्रकार संतुलित किया जाए कि आधुनिकता और परंपरा के बीच सामंजस्य स्थापित हो सके।

संदर्भ सूची

1. त्रिपाठी, अजय कुमार (2024). अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक एवं शैक्षणिक गतिशीलता: एक अध्ययन. वार्षिक जनजातीय शोध पत्रिका, पृष्ठ 12-35.
2. सिन्हा, नरेश चंद्र (2024). उरांव समाज में शिक्षा और संस्कृति का अंतःसंबंध. आदिवासी विकास शोध जर्नल, पृष्ठ 48-73.
3. निगम, प्रमोद कुमार (2024). आधुनिक शिक्षा और जनजातीय समाज: महाराष्ट्र का परिप्रेक्ष्य. जनजातीय विमर्श, पृष्ठ 22-51.
4. वर्मा, कमलेश प्रसाद (2024). संथाल जनजाति की सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक स्थिति. भारतीय जनजातीय अनुसंधान, पृष्ठ 60-89.
5. चौधरी, मनोज कुमार (2024). राजस्थान के भील समुदाय में शिक्षा की चुनौतियाँ. आदिवासी जागरण, पृष्ठ 15-40.
6. कुशवाहा, राकेश कुमार (2024). गोंड जनजाति की सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका. ग्रामीण शिक्षा समीक्षा, पृष्ठ 33-58.

7. राठौर, सुरेश कुमार (2024). डूंगर समुदाय की शैक्षणिक समस्याएँ और समाधान. सामाजिक अध्ययन जर्नल, पृष्ठ 44-72.
8. तिवारी, राजेश कुमार (2024). मुंडा जनजाति में शिक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तन. भारतीय समाज अध्ययन, पृष्ठ 18-47.
9. **मिश्रा**, संजीव कुमार (2023). बस्तर की मुरिया जनजाति में शिक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन. रायपुर: छत्तीसगढ़ जनजातीय अनुसंधान संस्थान। पृ. 12–47.
10. **पटेल**, रवीन्द्रनाथ (2023). हो जनजाति में सामाजिक-सांस्कृतिक गतिशीलता और शिक्षा की चुनौतियाँ. राँची: झारखंड जनजातीय शैक्षिक विकास परिषद्। पृ. 22–68.
11. **रंजन**, विनोद कुमार (2023). ओडिशा के बोंडा समाज में सामाजिक और शैक्षणिक समावेश का मूल्यांकन. भुवनेश्वर: अनुसूचित जनजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र। पृ. 15–59.
12. **सिंह**, मनोज कुमार (2023). कोरकू जनजाति में शिक्षा, सांस्कृतिक निरंतरता और सामाजिक परिवर्तन: एक तुलनात्मक अध्ययन. नागपुर: महाराष्ट्र जनजातीय अध्ययन संस्था। पृ. 18–73.
13. पटेल, राजेश कुमार (2023), अनुसूचित जनजातियों में सांस्कृतिक गतिशीलता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, भारतीय जनजातीय शोध परिषद प्रकाशन, पृष्ठ 55-76।
14. नागेश्वर, विजय शंकर (2023), आदिवासी शिक्षा और सामाजिक प्रगति के अंतर्विरोध, जनजातीय अध्ययन जर्नल, खंड 9, पृष्ठ 101-125।
15. कुशवाहा, नरेश चंद्र (2023), सांस्कृतिक संक्रमण और जनजातीय युवाओं की पहचान, भारतीय मानवशास्त्र अकादमी प्रकाशन, पृष्ठ 201-223।
16. ठाकुर, प्रवीण कुमार (2023), अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता, जनजातीय विकास समीक्षा, खंड 5, पृष्ठ 66-90।